॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

आमुख

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहसङ्कल्प व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प रूपी वृक्ष की शाखाएँ फलवती हो रही हैं। *"ईवनिंग ब्लॉसम्स: द टेम्पिल ट्रेडीशन ऑफ़ साँझी इन वृन्दावन," "श्रीगोविन्ददेव: अ डायलॉग इन स्टोन, इन फेवर ऑफ़ गोविन्ददेवजी: हिस्टोरिकल डाक्यूमेंट्स रिलेटिंग टु अ डिअटी ऑफ़ वृन्दावन एण्ड ईस्टर्न राजस्थान"* आदि प्रकाशन हमको उपलब्ध हो चुके हैं। मूल सङ्कल्प के अन्तर्गत ग्रन्थसूची, दृश्य एवं श्रव्य आलेखों की सूची एवं अन्य कई शोध-ग्रन्थ प्रकाशन-प्रक्रिया में हैं। डॉ० मोनिका के प्रकाशन *"इन फेवर ऑफ़ गोविन्ददेव"* के फलस्वरूप व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प का अनुसन्धान-क्षेत्र जयपुर एवं राजस्थान की ओर बढ़ा, जिसके लिए हाईडलबर्ग विश्वविद्यालय के सूदेशियन इंस्टीट्यूट तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मिलकर कार्यरत हैं।

व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प के द्वारा भारतीय-रस-चिन्तन धारा के प्रमुख ग्रन्थ श्रीरूप गोस्वामी कृत *श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु* का प्रथम खण्ड हिन्दी-अनुवाद-सहित प्रकाशित हो चुका है। उसका सम्पादन और अनुवाद रस-परम्परा की आचार्या प्रो० प्रेमलता शर्मा जी की साधना के द्वारा हमें प्राप्त हुआ। आज उसी *श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु* का द्वितीय खण्ड आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए भाववैचित्त्य की स्थिति का अनुभव हो रहा है।

श्रीरूप गोस्वामिपाद की इस गम्भीर कृति को हिन्दी में सुलभ प्रो० शर्मा ने बनाया, किन्तु हमारी कृतज्ञता को स्वीकारने के लिए आज वे हमारे मध्य नहीं हैं। महाप्रयाण के पूर्व ही उन्होंने इस द्वितीय खण्ड के हिन्दी अनुवाद के साथ ही एक विवेचनात्मक अवतरणिका की रूपरेखा और नोट्स कृपापात्री अनुजा डॉ० ऊर्मिला शर्मा को लिखाकर सुरक्षित कर दी थीं। दिवंगता बहिन जी की उस अनूठी कृपा को इस खण्ड में डॉ० ऊर्मिला जी ने अनुवाद को व्यवस्थित एवं अवतरणिका को प्रस्तारित कर प्रस्तुत किया है।

लगता है कि इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है। श्रीरूप गोस्वामी ने भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि तथा नाटकचन्द्रिका के रूप में रसप्रस्थानत्रयी की रचना की थी। किन्तु रचना प्रक्रिया में ग्रन्थों को सम्पादित कर प्रकाशित करने का दायित्व श्रीजीव गोस्वामी का ही बना। उसी प्रकार श्रीरूप गोस्वामी के इन ग्रन्थों का सम्पादन, अनुवाद तथा विमर्श यद्यपि प्रो० प्रेमलता शर्मा कहीं पूर्णत: और कहीं आंशिक रूप से ही कर गई हैं, तथापि हमारा सौभाग्य है कि उस महत्त्वपूर्ण कार्य का विधिवत् सम्पादन तथा अन्तिम रूप देने की सेवा को ऊर्मिला जी ने सहज रूप से स्वीकारा है, उस परम्परा को पुष्ट करते तथा आगे बढ़ाते हुए।

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु के प्रस्तुत संस्करण की आवश्यकता और विशेषता के बारे में प्रथम खण्ड में ही सम्पादिका प्रो० प्रेमलता शर्मा के द्वारा स्पष्टतः कहा जा चुका है। यह ग्रन्थ क्या है? इसका सूत्रात्मक परिचय भी प्रथम खण्ड की भूमिका में दिया जा चुका है। पुनरावृत्ति न करते हुए मैं स्वामी श्री महेशानन्द गिरि जी की आनन्दाभिव्यक्ति यहाँ उल्लिखित करना चाहूँगा:-

"...यह भक्ति स्वयं ही रसरूप है, और यही अमृत है। शृङ्गार आदि इसी की अभिव्यक्ति के प्रकार हैं। साधकों-पार्षदों-परिकरों के भेद से पाँच रस प्रधानतया एवं अन्य औपाधिक या गौण रस परिस्थिति-भेद से पूर्णतया यहाँ निरूपित होने से इस ग्रन्थ को सिन्धु (समुद्र) कहा गया है। इस प्रकार सभी रसानुभूतियों के भेदों का यह विश्वकोष बन गया है। श्रीरूप गोस्वामी जी ने भगवदवतार श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु जी का सान्निध्य पाकर अपने को तो कृतार्थ किया ही, अपनी रचनाओं से मानव मात्र के लिए कृतार्थता के मार्ग को सुलभ एवं प्रशस्त किया है।

लीलाचिन्तन की विविधताओं का जो बीज श्रीमद्भागवत में है, उनको विस्तार से रस-ग्रहण के विविध वर्गीकरण के द्वारा यहाँ इतना स्फुट कर दिया गया है कि साहित्य-शास्त्री भी चमत्कृत हुए बिना नहीं रह सकेंगे। हिन्दीभाषियों से यह निधि छिपी न रहे अतः सुश्री प्रेमलताजी ने इसका प्रामाणिक अनुवाद एवं श्रीजीव गोस्वामी, श्री मुकुन्ददास तथा श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती की संस्कृत चिन्तनिकाओं का सार उपस्थापित किया है। वे सङ्गीत, साहित्य एवं नाट्य की अगाध विज्ञाता तो थी हीं, उच्च कोटि की साधिका भी थीं। अनुवाद अत्यन्त उत्तम बन पड़ा है एवं मूलग्रन्थ के भावों का पूर्ण रक्षण इसमें है। कई स्थलों पर, टीकाकारों के समय अत्यन्त प्रसिद्धि होने से जो विस्तार के योग्य नहीं समझा गया होगा, उस विषय को भी वर्तमान परिवेश में समझाने का स्तुत्य प्रयास विमर्श में अनुवादिका ने किया है। उज्ज्वलनीलमणि आदि का प्रकाशन भी इस शृङ्खला में होने जा रहा है-यह प्रसन्नता का विषय है।"[१]

व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प के अन्तर्गत श्रीरूप गोस्वामी के तीनों प्रमुख ग्रन्थों को अनुवाद एवं विमर्श सहित सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम खण्ड के प्राक्कथन में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इस सङ्कल्प को डॉ० कपिला वात्स्यायन ने प्रकट किया था। वास्तव में यह प्रसन्नता की बात है कि वर्तमान सदस्य-सचिव डॉ० एन०आर० शेट्टी ने भी उसी सङ्कल्प को दोहराया है, आगे बढ़ाया है।

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु के तीसरे खण्ड में श्रीजीव गोस्वामी, श्री मुकुन्ददास एवं श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती की टीकाओं को एक साथ प्रकाशित किया जाएगा जो भारतीय रसशास्त्र के विद्वान्

---

[१] *प्रेम रसायन तथा सङ्गीतमीमांसा: द अल्कमी ऑफ़ लव एण्ड विज़्डम ऐज़ एक्सप्रेस्ड थ्रू द होलिस्टिक लाइफ एण्ड वर्क्स् ऑफ़ प्रो० प्रेमलता शर्मा*, सं० ऊर्मिला शर्मा, दिल्ली: राधा प्रकाशन २००२, पृ० १०९-१०।

चिन्तकों के लिए एक अप्रतिम उपलब्धि होगी। प्रस्तुत प्रकाशन के साथ ही डॉ० डेविड एल० हीबरमैन द्वारा *श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु* का सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद एक खण्ड में व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। डॉ० ऊर्मिला जी द्वारा स्मृतिशेष प्रो० प्रेमलता जी के द्वारा छोड़े गए *श्रीउज्ज्वलनीलमणि* के हिन्दी अनुवाद एवं विमर्श को पूर्णता प्रदान करने का कार्य अपनी उन्नत अवस्था में है, जिसका अनुवाद, विमर्श तथा टीकाओं सहित प्रकाशन २-३ खण्डों में आपके सामने आएगा। तदुपरान्त श्रीरूप गोस्वामीकृत नाटकचन्द्रिका का प्रकाशन सङ्कल्पित है।

प्रथम खण्ड की अवतरणिका को प्रो० प्रेमलता शर्मा जी द्वितीय खण्ड में विस्तारित करने वाली थीं। वह कार्य उन्हीं के शिक्षण एवं निर्देशानुसार उनकी अनुजा डॉ० ऊर्मिला जी ने किया है, जब बहिन जी सशरीर हमारे सामने नहीं हैं। यह 'अवतरणिका-प्रस्तार' अपने आप में पूर्ण एक शोध आलेख है, जिसमें भक्ति एवं रस चिन्तन का एक सर्वाङ्गीण चित्रण दिखायी पड़ता है; इस नाते यह जिज्ञासु-पाठकों के लिए अवश्य उपादेय होगा। हम आशा करते हैं कि व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प के इन सङ्कल्पों को प्रकाशित करने हेतु डॉ० ऊर्मिला शर्मा जी की निष्ठापूर्ण सारस्वत सेवा हमें प्राप्त होती रहेगी।

श्रीवत्स गोस्वामी

श्रीधाम वृन्दावन
पवित्रा एकादशी
सं० २०५९

श्रीवत्स गोस्वामी
निदेशक
व्रज-नाथद्वारा प्रकल्प